सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

ब्रह्मा बाबा अशरीरीपन की गहन तपस्या से सम्पूर्ण फरिश्ता बने। वे अति महान थे, पालनहार थे और बहुत निर्मल व शीतल फरिश्ते बन गये थे। अंत में तो वे ऐसे रहते थे, मानो इस संसार में रहते ही न हों। हम सभी ब्रह्मा वत्स जनवरी मास के प्रथम 18 दिन गहन तपस्या में बिताएं। हमें विश्वास है कि आप ऐसा ही करना चाहेंगे। हम कुछ सरल सी साधना यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, आप उस पर ध्यान दें -

प्रथम सप्ताह

स्वमान - मैं ब्रह्मा बाप समान आचरण करने वाला ब्रह्माचारी हूँ।

शिवभगवानुवाच - 1. ब्रह्माचारी अर्थात् संकल्प, बोल और कर्म रूपी कदम नैचुरल ब्रह्मा बाप के कदम-ऊपर-कदम हो, जिसको फुट स्टेप कहते हो। मन-वाणी-कर्म के कदम ब्रह्माचारी हों। ऐसे ब्रह्माचारी का चेहरा और चलन सदा ही अंतर्मुखी और अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करायेगा।

2. ब्रह्माचारी अर्थात ब्रह्मा आचार्य। ब्रह्मा आचार्यों का चित्र है सदा सुख की शैय्या पर आराम से अर्थात शांति स्वरूप में विराजमान। तो चेक करो कि सदा पवित्रता की प्राप्ति, सुख-शांति की अनुभूति हो रही है? जीवन से दु:ख-अशांति का नाम-निशान समाप्त हो जाए।

3. ब्रह्मा बाप समान हर बोल महावाक्य हो, साधारण वाक्य नहीं क्योंकि आपका जन्म ही साधारण नहीं अलौकिक है। अलौकिकता का अर्थ ही है पवित्रता। ब्राह्मण अर्थात जो ब्रह्मा बाप का आचरण वो ही ब्राह्मणों का आचरण अर्थात कर्म हो। उच्चारण भी ब्रह्मा बाप समान, आचरण भी ब्रह्मा बाप समान हो - इसको कहेंगे फालो फादर।

4. हरेक बच्चे का लक्ष्य ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण बनने का है, तो लक्ष्य प्रमाण सर्व लक्षण स्वयं में भरकर सम्पन्न बनो। इसके लिए विशेष धारणा है -सदा ब्रह्माचारी अर्थात ब्रह्मचारी और सदा पर-उपकारी।

योगाभ्यास - 1. शांतिस्तम्भ को इमर्ज करें....अनुभव करें कि लाइट स्वरूप सम्पूर्ण फरिश्ता ब्रह्मा बाबा जिनके मस्तक पर महाज्योति चमक रही है उनके सम्मुख मैं भी फरिश्ता खड़ा हूँ...सम्पूर्ण फरिश्ता ब्रह्मा बाबा और साथ में महाज्योति शिव बाबा मुझे 'ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता भव' का वरदान दे रहे हैं....बाबा कह रहे हैं बच्चे, तुम्हारे तीव्र पुरूषार्थ से ही परिवर्तन की गति तीव्र होगी....तुम्हारे सम्पन्न बनने में देरी से नव दुनिया के आगमन में देरी हो रही है...फिर मैं फरिश्ता ...बापदादा का हाथ पकड़कर प्रतिज्ञा करता हूँ कि बाबा अब मैं इस संसार में या तो निराकारी रूप में रहूंगा या फरिश्ते स्वरूप में....साकारी देहभान लिए नहीं...

2. शांति-स्तम्भ दिव्य अलौकिक प्रकाश से भरपूर हो गया है....बापदादा लाइट रूप में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दे रहे हैं...मुझ आत्मा की देह भी शांतिस्तम्भ में विलीन हो गई...मैं-पन, मेरापन, देह व देह के सम्बन्ध सब कुछ विलीन हो गया...अब मैं केवल निराकार सूक्ष्म ज्योति बच गई...देखें स्वयं को मुक्ति व जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करें, अब केवल मैं आत्मा व बापदादा और कोई नहीं....।

3. याद करें...ब्रह्मा बाबा का वह त्याग और वह अशरीरीपन की, विदेही स्थिति की गहन तपस्या जिसके आधार पर हम बच्चे आज भी उनकी पालना का अनुभव कर रहे हैं....उनका सम्पूर्ण त्याग हम बच्चों के

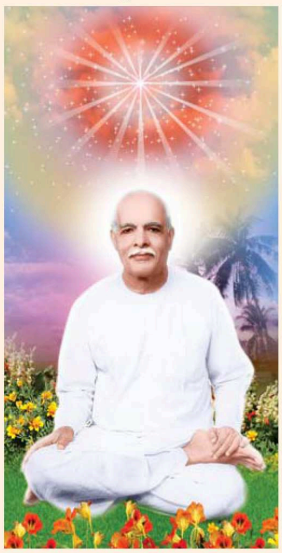

लिए, हम बच्चों को सतयुगी दुनिया का राज्यभाग्य प्राप्त कराने के लिए उन्होने शिव बाबा पर स्वयं को कुर्बान कर दिया...इस प्रकार के चिन्तन से बाबा के प्यार में समा जाएं....लवलीन हो जाएं...उनके समान न्यारा फरिश्ता बन जाएं....।

ब्रह्मा बाबा की विशेषताओं का चिन्तन करें - 1. एकांतप्रिय व अंतर्मुखी - बाबा इस विशेषता के कारण ही सदा शांति और सुख के सागर में समाये रहे और अन्य आत्माओं को भी अपने शुद्ध संकल्प और वायब्रेशन द्वारा, वृत्ति और बोल द्वारा, सम्पर्क द्वारा शांति व सुख की अनुभूति कराते रहे, ऐसे फालो फादर करो तब कहेंगे ब्रह्माचारी।

2. तपस्वीमूर्त - ब्रह्मा बाबा निरंतर तपस्वीमूर्त रहे, उनके स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई नहीं देता था। कोई कैसी रजोगुणी वा तमोगुणी संस्कार-स्वभाव वाली आत्मा हो, पुरूषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी, फिर भी उनके प्रति कल्याण का संकल्प वा भावना रही। ऐसे फालो फादर करो अर्थात आत्मिक दृष्टि-वृत्ति का अभ्यास बढ़ाओ।

3. सर्वस्व त्यागी - ब्रह्मा बाबा नम्बरवन त्याग का उदाहरण बने। सब साधन होते हुए भी साधना में अटल रहे। ब्रह्मा के इसी त्याग ने संकल्प-शक्ति की सेवा कराई, ब्रह्मा की तपस्या का प्रभाव आज तक मधुबन भूमि में अनुभव करते हो। ब्रह्मा बाप के त्याग, तपस्या और सेवा का फल अभी तक मिल रहा है, ऐसे अपने त्याग, तपस्या और सेवा के वायब्रेशन्स विश्व में फैलाओ।

तीव्र पुरूषार्थियों के प्रति - ब्रह्मा बाप समान महान आत्माओं ! जैसे ब्रह्मा बाप ने जीवन के प्रारंभ से हर कार्य में तुरंत दान भी, तुरंत काम भी किया। ब्रह्मा बाप की निर्णय शक्ति सदा फास्ट रही। तो फालो ब्रह्मा बाप। जब फालो करना है तो क्यों, क्या, कैसे...यह व्यर्थ समाप्त हो जाता है। मन स्वच्छ, बुद्धि स्पष्ट होने से बाप समान डबल लाइट स्थिति सहज बन जाती है।

द्वितीय सप्ताह

स्वमान - मैं ब्रह्मा बाप समान विश्वकल्याणकारी हूँ।

सभी तपस्वी अपनी श्रेष्ठ तपस्या के बल से विश्वकल्याण के दिव्य कार्य में तत्पर हैं। तपस्या हेतु त्याग भी परमावश्यक है तो तपस्या का सुख भी अनुपम है। यह सुख जन्म-जन्म के दु:खों को समाप्त कर देता है। इस सुख की तरंगें मनुष्यात्माओं को सुख प्रदान करती है। आओ सच्चे दिल से तपस्या करें।

ये 18 दिन अन्तर्मुखी बन जाएं। 18 दिन में पाँच पर सम्पूर्ण मौन रख लें व व्रत भी रख लें या कम से कम बोलें। सादा व हल्का भोजन करें।

दिन में कभी भी तीन बार दस-दस मिनट बैठकर पाँच स्वरुपों का अभ्यास करें...समय आप स्वयं अपनी सुविधानुसार निश्चित कर लें।

सोने से पूर्व एक पत्र अपने खुदा दोस्त को लिखें। अमृतवेला मिस न हो।

बनने का समय अभी है, फिर नहीं, अत:सभी ब्रह्मा वत्स 18 दिन की गहन तपस्या करें तो 18 अध्याय का गीता ज्ञान आपके जीवन में आ जाएगा। इस साधना से आप नष्टोमोहा, स्मृति-स्वरुप, अनासक्त, न्यारे-प्यारे और विदेही बन जायेंगे।

फैजपुर। डीएसपी देवेन्द्र शिन्दे शॉल व श्रीफल भेंटकर ब्र.कु.शकुंतला को सम्मानित करते हुए।

गया-नूरकम्पाउण्ड। बौद्ध भिक्षु प्रमुख श्रद्धातीस थेरो को ईश्वरीय निमंत्रण देते हुए ब्र.कु.मौरीन तथा ब्र.कु.शीला।

उझानी। मेमोरी मैनेजमेंट कार्यक्रम में सिटी मजिस्ट्रेट निधि श्रीवास्तव, नगर अध्यक्ष पूनम अग्रवाल, ब्र.कु.शक्तिराज तथा अन्य।

मऊ। राज्यमंत्री का दर्जा प्राप्त रामसिंह राणा को सेवाकेन्द्र पर पधारने पर ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.विमला।

धौरहरा मल्ल वेहड़। शिव गोपाल सिंह को आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.सुनिता। साथ हैं ब्र.कु.मालती तथा अन्य।

भिलवडी। दूध फैक्ट्री के मालिक काका साहेब चितले, कांग्रेस अध्यक्ष आनंद राव मोहिते, ब्र.कु.निवेदिता तथा अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसर पर।